जो सामने तो बना-बनाकर कोमल बचन बोलता है और पीठ पीछे बुराई करता है तथा मन में कुटिलता रखता है- हे भाई इस प्रकार जिसका मन सांप की चाल के समान टेढ़ा है, ऐसे कुमित्र को त्यागने में ही भलाई है।

अतः गोस्वामीजी के अनुसार हमें मित्रता के धर्म,कर्त्तव्य का बोध होता है। साथ ही सच्चे मित्र की पहचान करने में सहयोगी है, जो हमारे जीवन जीने की राह के लिए अत्यंत उपयोगी है।

Scanned with CamScanner

अर्थात -जिन्हें स्वभाव से ही ऐसी बुद्धि प्राप्त नहीं है , वे मूर्ख हठ करके क्यों किसी से मित्रता करते हैं ? मित्र का धर्म है कि वह मित्र को बुरे मार्ग से रोककर अच्छे मार्ग पर चलावे। उसके गुण प्रकट करे और अवगुणो को छिपावे।

इसका तात्पर्य है कि मित्र का धर्म है की वह गलत मार्ग पर चलने वाले मित्र को सही राह दिखावे एवं अन्य व्यक्तियों के समक्ष उसके गुणों को ही बतावे, उसके अवगुणों को प्रकट न करे।

Scanned with CamScanner

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी। तिन्हहि बिलोकत पातक भारी ।। निज दुख गिरि सम रज करि जाना। मित्रक दुख रज मेरु समाना ।।

अर्थात- जो मनुष्य मित्र के दुःख से दुखी नहीं होते , उन्हें देखने से घोर पाप लगता है। अपने पर्वत के समान दुःख को धूल के समान एवं मित्र के धूल के समान दुःख को सुमेरु पर्वत के समान जानें।

Scanned with CamScanner

पहले पद में मीरा ने कृष्ण के प्रति अपनी अनन्यता व्यक्त की है तथा व्यर्थ के कार्यों में व्यस्त लोगों के प्रति दुख प्रकट किया है। वे कहती हैं कि मोर मुकुटधारी गिरिधर कृष्ण ही उसके स्वामी हैं। कृष्ण-भक्ति में उसने अपने कुल की मर्यादा भी भुला दी है। संतों के पास बैठकर उसने लोकलाज खो दी है। आँसुओं से सींचकर उसने कृष्ण प्रेम रूपी बेल बोयी है। अब इसमें आनंद के फल लगने लगे हैं। उसने दही से घी निकालकर छाछ छोड़ दिया। संसार की लोलुपता देखकर मीरा रो पड़ती हैं और कृष्ण से अपने उद्धार के लिए प्रार्थना करती हैं।

दूसरे पद में प्रेम रस में डूबी हुई मीरा सभी रीति-रिवाजों और बंधनों से मुक्त होने और गिरिधर के स्नेह के कारण अमर होने की बात कर रही हैं।

मीरा पैरों में धुंघरू बाँधकर कृष्ण के सामने नाचती हैं। लोग इस हरकत पर उन्हें बावली कहते हैं तथा कुल के लोग कुलनाशिनी कहते हैं। राणा ने उन्हें मारने के लिए विष का प्याला भेजा जिसे उन्होंने हँसते हुए पी लिया। मीरा कहती हैं कि उसके प्रभु कृष्ण सहज भक्ति से भक्तों को मिल जाते हैं।

Scanned with CamScanner

(इस छंद में , जब गोपियों की शिकायत पर कि कृष्ण उनका मक्खन चुराकर खा जाता है , माता यशोदा बालक कृष्ण को डांटने लगती हैं तो कृष्ण अपनी सफाई पेश करते हैं।)

माता , मैंने मक्खन नहीं खाया।

सुबह सवेरे ही में गायों के पीछे जंगल में चला जाता हूँ , जंगल ही मुझे पढ़ाता है।

चारों पहर (चौबीस घंटे) मैं बांसुरी लेकर भटकता रहता हूँ और शाम होने पर ही घर आता हूँ।

मैं छोटे छोटे हाथ वाला बालक हूँ में छींके (मक्खन की हाँडी जो ऊपर टांगी जाती है) तक कैसे पहुँच सकता हूँ।

ये सब गाय चराने वाले बालक मेरे दुश्मन हैं , इन्होंने मेरे मुँह पर जबरदस्ती मक्खन लगा दिया है।

तुम मन की बहुत भोली हो माँ जो इनकी बातों में आ गयी हो।

अवश्य ही तुम्हारे दिल में मेरे प्रति कुछ शक पैदा हो गया है , तुम मुझे पराया समझने लगी हो।

यह अपनी लाठी और कमरिया ले लो , इन्होने मुझे बहुत परेशान किया है।

सूरदास जी (कवि) कहते है , तब यशोदा माता ने हँस कर कृष्ण को गले से लगा लिया।

Scanned with CamScanner